आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:23-12-14

हमारी आत्मा को ज्ञान रत्नों से श्रृंगार कर हमें २१ जन्मो के लिए मालामाल बनाने वाले, बेहद के ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हें जो भी ज्ञान मिलता है, उस पर विचार सागर मंथन करो, ज्ञान मंथन से ही ज्ञान अमृत निकलेगा. यह ज्ञान अमृत ही ज्ञान रतन है. जितना तुम इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ज्ञान रत्न धारण करते हो उतना मालामाल बनते हो. अभी के ज्ञान रत्न वहाँ के हीरे-जवाहरात बन जाते हैं. जब आत्मा ज्ञान रत्न धारण करें, मुख से ज्ञान रत्न ही निकाले, ज्ञान रत्न ही सुने और सुनाये तब उनके हर्षित चेहरे से बाप का नाम बाला हो. अभी पुरुषार्थ कर अपने आसुरी गुण को बदल दैवी-गुण को धारण करें तब स्वर्ग में २१ जन्म के लिए मालामाल बने.

बाबा अपनी मुरलीओं में हमें भक्ति-मार्ग और ज्ञान-मार्ग का कॉन्टरास्ट बताते है. भक्ति में न तो हम अपने-आप को जानते थे, न भगवान को जानते थे. जिसे थोड़ी प्राप्ति हुई उसको ही अपना गुरु मान लिया, भगवान बना दिया. अभी संगमयुग में स्वयं परमपिता-परमात्मा आकर हमें आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सत्य ज्ञान देते है और इस ज्ञान को समझने के लिए, धारण करने के लिए हमें दिव्यबुद्धि प्रदान करते है.

अभी हम आत्माये संगम पर है, हमारे एक तरफ़ है कलियुग कि काली खाई और दूसरी तरफ़ है सतयुगी सुंदर दुनिया. अभी हमारी माया-रावण से लड़ाई चल रही है. बाबा हमें हर रोज मुरलीओं में ज्ञान अमृत पिलाकर स्ट्रौग बनाते है जिसे माया पर विजय पा सके और स्व-परिवर्तन कर विश्व-परिवर्तन कर सके. आज की मुरली से ऐसे कुछ ज्ञान रतन निकालकर हमारे में धारण करेंगे.

मुरली कि सही समझ -- शिवबाबा कहते है मनुष्य समझते हैं कि कृष्ण मुरली बजाता था, उनकी बहुत महिमा करते हैं. लेकिन सिर्फ मुरली बजाना यह तो कॉमन बात है. कई फकीर लोग भी मुरली बजाते हैं. मुरली बजाना माना ज्ञान देना. गायन भी है ना कि मुरली में जादू था. तो जरूर कोई जादू होगा ना. बाप तुम्हें जो मुरली सुनाते है उसमें ज्ञान का जादू है. वह

काट कि मुरली में जादू है यह समझना तो मनुष्यों का अज्ञान है. तुम्हें यह ज्ञान सर्व आत्माओं को देना है कि भगवान की सही मुरली किसको कहा जाता है.

भगवान की पहचान -- शिवबाबा कहते है मनुष्य तो कृष्ण को ही भगवान समझते है. बाबा कहते है कृष्ण तो देवता था, सतयुग का पहला प्रिन्स था. बाबा ने ही तुम्हें सृष्टि चक्र का सत्य ज्ञान दिया है. कहते है मनुष्य से देवता, देवता से मनुष्य यह होता ही रहता है. दैवी सृष्टि भी होती है, तो मनुष्य सृष्टि भी होती है, यह सृष्टि चक्र फिरता ही रहता है. मनुष्यों को विकारी, देवताओं को निर्विकारी कहा जाता है. देवताओं की सृष्टि को पवित्र दुनिया कहा जाता है. अभी इस ज्ञान से तुम मनुष्य से देवता बन रहे हो. देवताओं में फिर यह ज्ञान होता नहीं. देवताए है सदागति में, यह ज्ञान चाहिए दुर्गति वालों को. इस ज्ञान से ही दैवी गुण आते है. ज्ञान की धारणा से तुम्हारी चलन देवताई हो जाती है. कृष्ण की आत्मा भी अभी यह ज्ञान ले रही है फिर जाकर सतयुग में कृष्ण के रुप में पहला जन्म लेगी और लक्ष्मी के साथ विवाह के बाद नारायण कहलायेंगी. लक्ष्मी-नारायण ही सतयुग के पहले विश्व महाराजा-महारानी बनते है. बाबा कहते है वह अकेले तो नहीं बनेंगे. उनके साथ उसके राज्य-अधिकारी और अन्य प्रजा भी होगी. सब अभी ही इस ज्ञान से अपना-अपना पद लेते है, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार. भगवान की सत्य पहचान देकर यह बात तुम्हें सबको बतानी है जिसे जो भी आत्मा जितना भी अपना भाग्य बनाना चाहे बना सके.

परमात्मा ही ज्ञान-सागर है -- शिवबाबा कहते है मनुष्य तो कृष्ण को ही ज्ञान-सागर समझते है. जब की तुम जानते हो मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई तो स्वयं परमपिता-परमात्मा शिव तुम्हें अभी संगमयुग में पढ़ा रहे है. देवतायें तो तुम्हें यह पढ़ाई नहीं पढ़ायेंगे. इसलिए देवताओं को कभी ज्ञान का सागर नहीं कहा जाता. ज्ञान का सागर तो परमपिता-परमात्मा शिव है जो अभी तुम्हें आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते है. ज्ञान-सागर की पहचान भी तुम्हें लोगों को देनी है.

९ रत्नों की माला का राज (Razz) -- शिवबाबा कहते है तुम यह लक्ष्मी-नारायण को देखते हो कितने हर्षित मुख है. इनकी आत्मा ने भी यह ज्ञान रत्न धारण किये थे. उनके मुख से यह ज्ञान रत्न निकाले थे. रत्न ही सुनाते थे. ऐसे तुम्हारा भी मुखड़ा सदैव हर्षित रहना

चाहिए. तुम्हारे मुख से सदैव ज्ञान रत्न ही निकले. बाबा तुम्हें यह राज (razz) बतलाते है कि अभी तुम जो ज्ञान रत्न लेते हो वह फिर सच्चे हीरे-जवाहरात बन जाते है. मनुष्य जो ९ रत्नों की माला पहनते है वह कोई हीरे-जवाहरातो की नहीं यह चैतन्य रत्नों की माला है. मनुष्य लोग फिर वह रत्न समझ अंगूठियाँ आदि पहनते है. आत्माओं की ज्ञान रत्नों कि माला इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बनती है. यह रत्न ही २१ जन्मो के लिए तुम्हें मालामाल बना देते है जिसको कोई लूट न सके. यह ईश्वरीय पढ़ाई है बहुत धन पाने की. तो तुम्हें अपने को बहुत-बहुत समझदार बनाना हैं. जितना तुम्हारे में यह ज्ञान रत्नों धारण होंगे उतने ही तुम्हारे में दैवी-गुण आते जायेंगे. फिर सर्व-गुण सम्पन्न होकर माला में पिरोयें जायेंगे.

बाबा ने आज सारी मुरली में और भी बहुत ज्ञान रत्नों हमें दिये है जिसे हम अपने में धारण करें और दूसरों को भी करायें.

ॐ शांति.